हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2021

एम.एच.डी.-23 : मध्यकालीन कविता – 1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) राजा गियँ कै सुनहु निकाई । जनु कुम्हार धरि चाक फिराई ।।
भोंगत नारि कचोरा लावा । पीत निरातर गहि दिखरावा ।।
देव सराहँहि (तैसो) गोरी । गियँ उँचार गह लिहसि अजोरी ।।
अस गियँ मनुसँहि दीख न काहू । ठास धरा जनु चलै कियाहू ।।
का कहुँ असकै दयी सँवारीं । को तिह लाग दयि अँकवारी ।।
हियै सिरान राजा कर, सुनसि कण्ठ अँकवारि ।।
गोबर मार विधासों, आनों चाँदा नारि ।।

(ख) रैदास जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच ।
नर कूँ नीच करि डारि हैं, ओछे करम की कीच ।।

(ग) ऊधो ! इतनी कहियो जाय ।
अति कृसगात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय ।।
जल समूह बरसत अँखियन तें, हूँकत लीने नाँव ।
जहाँ जहाँ गोदोहन करते ढूँढ़त सोई सोई ठाँव ।।
परति पछार खाय तेहि तेहि थल अति व्याकुल ह्वै दीन ।
मानहुँ सूर काढ़ि डारे हैं बारि-मध्य तें मीन ।।

(घ) जा दिन तें मुसिकानि चुभी उर ता दिन तें जु भई बनवारी ।
कुण्डल लोल कपोल महा छवि कुंजन तें निकस्यो सुखकारी ।।
हौ सखी आवतही बगरै पग पैड तजी रिझई बनवारी ।
रसखानि परी मुसकानि के पानिन कौन गहै कुलकानि बिचारी ।।

2. निर्गुण संतकाव्य धारा के विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों का परिचय दीजिए । *10*

3. 'चंदायन' में अभिव्यक्त लोकजीवन का विवेचन कीजिए । *10*

4. रविदास के भक्ति-दर्शन पर विचार कीजिए । *10*

5. सूरदास की काव्यभाषा की विशेषताएँ बताइए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणी लिखिए : *2×5=10*

(क) दादूदयाल

(ख) सूर-काव्य का रूप विधान

(ग) रविदास की कविता में सामाजिक चेतना

(घ) अवधू